EDUZONE: International Peer Reviewed/Refereed Multidisciplinary Journal (EIPRMJ), ISSN: 2319-5045
Volume 12, Issue 2, July-December, 2023, Available online at: www.eduzonejournal.com

डॉ० जगभगवान शर्मा के साहित्य में वैयक्तिक एवं प्रकृति विषयक संवेदना

हरिस्वरुप

शोधार्थी, हिंदी विभाग, सनराइज विश्वविद्यालय, बागड़ राजपूत, अलवर (राजस्थान)

षोध–सारः–

प्रकृति और व्यक्ति का सम्बन्ध अभिन्न है। यह तारतम्य रिश्ता आज का नहीं है बल्कि तब से चला आ रहा है जब से संसार का उद्भव हुआ है। सुबह उगते हुए सूर्य की लाली, वर्षा ऋतु में उगड़ती घुमड़ती घटाएं, जंगलों में नृत्य करते मोर, कलकल बहती नदियाँ, पहाड़ों से झर–झर झरनों की मधुर संगीतमय ध्वनि, आकाश में दमकता इन्द्रधनुष, पुर्णिमा की रात की चान्दनी का मनमोहक सौन्दर्य वनों–उपवनों में पक्षियों की चहचाहट, बागों में गुंजते भँवरे, महकते फूलों की खुषबू, टिमटिमाते सितारे, चमकता चाँद, नीलाम्बर और उसमें विभिन्न मुद्राओं में तैरते बादल, हरी–भरी हरियाली आदि असीम नजोर व्यक्ति के मन को आह्लक्षित कर उसके नयनों में समाकर उसमें आनन्द की अनेक तरंगों की शानदार अनुभूति को परावर्तित कर प्रिज्म की भाँति विभिन्न एहसासों का अपवर्तन कर प्रकृति और व्यक्ति की निकटता उनके सानिध्य पूर्ण आत्मिक सम्बन्धों की पुष्टि करते हैं।

मुख्य शब्दः–वैयक्तिक संवेदना, व्यक्तिगत भाव, व्यक्ति अन्तर्मुखता

प्रकृति की विषेषाकर्षण भरी दृष्यावली की विविध धाराओं की चित्रावली को कवि ने इस प्रकार पेष किया है– "कोयल की कुहू–कुहू, मयूरों का नृत्य, मेघों की प्रतिच्छाया में उड़ती हुई बगुलों की पंक्तियाँ, शरद ऋतु का निरभ्रगगन, वसन्त ऋतु में लहराते पत्ते और अनेक रंगों की छटा बिखेरते पुष्प, भँवरों की गुनगुन सभी हमारे मन–प्राणों को पुलकित कर देते हैं।"[1]

प्रकृत्ति के प्रति अनुराग कवियों के हृदय असीम रूप में पाया जाना स्वाभाविक गुण है क्योंकि उनका मन स्वयं प्रकृ ति–चित्रण में अपने नाम से ही प्रसिद्ध हो अथवा ख्याति प्राप्त अपने मन में अच्छी प्रकार हृदयगम करता रहा है। वेदों पर दृष्टि डालने से पता चलता है कि प्रकृति वर्णन परिपूर्ण है– "ऋग्वेद की ऋचाएँ यजुर्वेद के मन्त्र, सामवेद के संगीतमय मन्त्र–सर्वत्र प्रवृति के विविध रंगों तथा रहस्यों का वर्णन मिलता है।"[2] मानव और मानव जीवन के लिए प्रकृति को वरदान के रूप में माना जाता रहा है। यही एक शाश्वत सामयिक सांमजस्यपूर्ण समन्वयवादी यथार्य विचारधारा है क्योंकि प्रकृति का सानिध्य उसका संसर्ग व्यक्ति को मानसिक रूप से तनावमुक्त कर देता है। उसे अलौकिक आनन्द से भर देता है। प्रकृति और प्रभु में भी अन्तर नहीं है। प्रकृति और अध्यात्म वस्तुतः एक दूसरे के पूरक है। इन्हीं के प्रभाव के कारण व्यक्ति मन से पाक साफ होकर पवित्र हो जाता है और प्रकृति के साहचर्य में रहकर यह प्रमाणित करता है कि उसका सम्बन्ध प्रकृति के साथ तादात्म्य एवं शा वत है जो कवियों के हृदय से उद्गम होकर प्रकृति वर्णन के विविध रूपों में लक्षित होते हैं।

वैयक्तिक संवेदना का अभिप्रायः–

इस लौकिक जीवन में व्यक्ति का सुखात्मक और दुखात्मक अनुभूतियों का साक्षात्कार होता है तो इसी प्रकार के एहसास को व्यक्ति की वैयक्तिक संवेदना कहा जाता है। सांसारिक विषय वस्तुओं एवं जड़ चेतन का बोध उनके माध्यम से प्राप्त अनुकूल–प्रतिकूल का अनुभव ही पार्थिव संवेदना है। इस संवेदना में ही बाध्य संसार की आकृतियों और उनकी बिम्ब मात्राओं में गुणों पर आधारित स्वरूप कायम किया है जिससे सम्पूर्ण विष्व का भान होता है। भौतिक संवेदना के अंतर्गत ही व्यक्तिगत अथवा वैयक्तिक संवेदनाओं को सम्मिलित किया गया है। एक संवेदनशील व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत अनुभूतियों को सामाजिक मान्यताओं में बदलने की कोशिश करके कामयाबी पाने पर खुशी का एहसास करता है। वह वैयक्तिक स्तर पर किसी बच्चे भी खूबसूरत बालरूपता का उल्लेख

करके अपने व्यक्तिगत विचार अपनी व्यक्तिगत संवेदना की अभिव्यक्ति करता है। कई दफे वह किसी बच्चे, नौजवान लड़के–लड़की, प्रौढ़–प्रौढ़ा को दुःखित अवस्था में देखकर खुद दुःख का एहसास करता है। यदि आमजन है तो वह वाणी द्वारा ही अपनी वैचारिक क्षमतानुसार अपनी सोच को उजागर करता है और अगर साहित्यकार है तो वह अपनी कलम द्वारा अपनी सृजनात्मकता द्वारा ही अपनी अभिव्यक्ति को सही रूप प्रदान करता है, जो हकीकत में वैयक्तिक संवेदना का ही रूप है। इस सिलसिले के सम्बन्ध में तपेश चतुर्वेदी कहते हैं, "संवेदना वह अनुभूति है जो कवियों द्वारा अपने व्यक्तित्व तथा अपनी भावनाओं को बाध्य जड़–चेतन पदार्थों के प्रतिकल्पना के माध्यम से प्रक्षेपण द्वारा तादातम्य स्थिति में उत्पन्न होती है।"[3]

मनुष्य और समाज के परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध होने के कारण ही कवित्त समाज में रहकर सदैव गतिशील एवं कार्यशील रहने के साथ–साथ प्रवाहषील होता है क्योंकि उसकी अभिलाषा समाज के रीति–रिवाजों को नवीन मूल्यों के तहत विस्थापित करने ही होती है। जब वह अपनी भावनाजन्य सामर्थ्य के माध्यम से सामाजिक मान्यताओं को स्वयं की विचारधारा के बल पर समझने और जानने का प्रयास करता है तब ऐसा करते वक्त उसके दिमाग में असंख्य भावनायें आलोकित होकर छलकने लगती है। इन्हीं भावनाओं एवं आवेशों की इन्द्रिय बोध क्षमता अथवा संवेदनशीलता को वैयक्तिक संवेदना के तहत माना जाता है जो कि वैयक्तिक संवेदना का रूप ही माना जाता है। "किसी वस्तु विशेष या व्यक्ति विशेष को देखकर मन में प्रक्रिया होती है, वही वैयक्तिक संवेदना कहलाती है।"[4] इस प्रकार संवेदना व्यक्ति के चिन्तनात्मक, धरातल पर उपजती है और अपना आकार ग्रहण करती है। वैयक्तिक संवेदना का रिश्ता अपने वजूद की खोज एवं समाज की तरक्की की खातिर प्रयास करना है।

व्यक्तिगत भावः–

व्यक्ति विशेष से सम्बन्धित व्यक्तिगत अथवा निजी कहलाता है जिसे अंग्रेजी में पर्सनल कहा जाता है अर्थात् दूसरे शब्दों में कहें तो वैयक्तिक का अर्थ हिन्दी में एक व्यक्ति का होता है यानि एक व्यक्ति को ही वैयक्तिक कहते हैं। इसका पर्यायवाची शब्द भी 'व्यक्ति' ही होता है। डॉ० वनिता कुमारी ने इस विषय में महत्वपूर्ण शब्दों की अभिव्यक्ति की है। "व्यक्ति के चिन्तन, क्रिया कलाप तथा कुशाग्रता को नियंत्रित एवं निर्देशित करने में व्यक्ति के अपने मूल्य ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जिन्हें वैयक्तिक मूल्य की संज्ञा प्रदान की जा सकती है। ये मूल्य ही व्यक्ति की उन्नति, प्रगति, सुरक्षा, आत्मविश्वास और उसकी स्वच्छन्दता में सहायक प्रमाणित होते हैं।"[5]

डॉ० जयभगवान शर्मा का भी मानना है कि सही अर्थों में व्यक्ति की वैयक्तिकता उस व्यक्ति के मूल्य ही निर्धारित करते हैं क्योंकि मूल्यों का निमार्ण और जिन्दगी में व्यक्ति की सोच और उसकी भावनाओं से तैयार होती हैं। जब ये भावविचार और सोच व्यक्ति की स्वयं की जिन्दगी से उद्भव होकर निखरते हैं और उन्हीं ख्यालों के अनुरूप व्यक्ति की परिस्थितियों और परिवेश में समा जाते हैं और उसमें परिवर्तन, परिवर्धन और निर्धारण करने लग जाते हैं, तब वह उस व्यक्ति के व्यक्तित्व का दर्पण बनकर उसमें प्रतिबिम्बित होने लगते हैं। कवि ने अपनी रचनाओं में व्यक्ति, वैयक्तिक और वैयक्तियता को बड़े ही शानदार तरीके से चित्रित किया है। व्यक्ति की जिन्दगी की वास्तविकता को चित्रित करते हुए उसे सही शब्दार्थ में पिरोया है –

फिर आऊँगा
करके अभिनय,
लौट जाऊँगा।
आया किला
दुनिया ने समझा
मात्र अकेला।[6]

आधुनिक युग में हृदय ही हमारा संसार हैं तथा हम हृदय की धड़कन, सिहरन की भावना की अंकित करने के लिए उत्सुक हैं। इतना ही नहीं अपनी प्रत्येक कल्पना स्वप्न को साकार बनाने में काबिल हैं। ये सब उस युग को प्रतिक्रिया के फलस्वरूप ही है। जहाँ कवि का आदर्श अपने विषय में मौन रहकर संसारभर का इतिहास अंकित

करता है। इसी दर्शन के आधार पर डॉ० जयभगवान शर्मा जी ने अपनी भावना को सुन्दर तरीके से अभिव्यक्त किया है–

सिहर उठता है तन और मन
सोचकर
एक अजीब सी आशंका को
कूल जब हम नहीं होंगे
तो ..... क्या होगा?
अन्तर्मन से
उठती है एक आवाज
होगा क्या?
यह संसार यूँ ही चक्रवत
बदलती रहेंगी ऋतुएँ
यूँ ही अनवरत
चलता रहेगा–सवंत्सर
यूँ ही सतत्
सब निरन्तर शाश्वत्
शाश्वत प्राण सिहरन।[7]

जिन्दगी की दृष्टि की विविधता उनकी वैयक्तिकता को ही दर्शाती है। उन्होंने धरातल नवीन के प्रति आकर्षण की प्रवृति को उजागर किया है। वैयक्तिकता का मनोवैज्ञानिक चित्रण –

तन्हाई है
एक वो लम्हा
कर सकते है
जब हम
आत्म–मंथन
करते हैं
महसूस
आत्म स्पन्दन,
कर सकते हैं
अनुभव
मानस जलधि में
तरंगित होते
भावों का उध्वेलन
और कर सकते हैं
आत्मसात उपात्त के पसरे
सन्नोट का अस्तित्व।[8]

कवि ने व्यक्तिगत सोच कल्पना की अपनी विचारधारा में नये उत्साह, नई उमंग, नई स्फूर्ति के भावों को भी मुखरित किया है –

जो भी सपने

आए रख्याला में तेरे
मेरे अपने।
तेरा प्यार
मिली ज्यों भवनिधि
करूँ दीदार।[9]

सारांशरूप में कहा जा सकता है कि आज के दौर कवि डॉ० जयभगवान शर्मा की व्यक्तिवादी विचारधारा प्रमुख रही है परन्तु इस वैयक्तिकता की आजादी के विषय में युगों–युगों से जो कवियों पर व्यक्तिगत भावनाओं, संवेदनाओं और आत्मानुभूति को व्यक्त करने के क्षेत्र में पाबन्दी रही उसे तोड़ने का सार्थक प्रयास किया है क्योंकि एक व्यक्ति के लिए एहसास व्यक्तिगत हो सकते हैं परन्तु उनकी अभिव्यक्ति साहित्यिक रूप धारण करने के पश्चात् वो सबकी हो जाती है। जनकल्याण और समाज के सुधार की प्रगति की बनकर समाजीकृत तथा साधारणीकृत की शर्त की सीमाओं के बन्धनों को तोड़कर व्यष्टि से समष्टि का रूप धारण कर लेती है।

अतः डॉ० जयभगवान शर्मा जी स्वतन्त्रता बाद के कवि है इसलिए उनकी रचनाओं में व्यक्ति, व्यक्तिगत तथा वैयक्तिक आजादी झलकती है। उन्होंने परम्पराओं और मर्यादाओं से स्वछन्द होकर जीवन की व्यक्तिगत अनुभूतियों को विविध रूप में विस्तार से लिखकर समाज को नवीन पथ की ओर अग्रसर का उपयुक्त कर्त्तव्य निभाया है।

व्यक्ति अन्तर्मुखताः–

व्यक्ति में मिलन सरिता, बातूनीपन और उर्जावान होने की विशेषता होती है। उसे व्यवहार कुशल समझा जाता है। इसके ठीक विपरीत संकोची, आत्म केन्द्रित और एकान्त व्यवहार से परिलक्षित इन्सान को अन्तर्मुखी कहा जाता है। उसके इन्हीं अवगुणों के कारण उसके लक्षणों के कारण उसे अन्तर्मुखता की अव्यावहारिकता से नवाजा जाता है। स्विस मनोवैज्ञानिक कार्ल जंग ने अन्तर्मुखता को इस प्रकार से परिभाषित किया है– "व्यक्तिपरक मानसिक अंतर्वस्तु के माध्यम से जीवन में अनुकूलन द्वारा अभिलक्षित मनोदृष्टि के रूप में, और बहिर्मुखता को बाहरी वस्तुओं की चाहत द्वारा अभिलक्षित मनोदृष्टि प्रकार के रूप में माना गया है।"[10]

डॉ० जयभगवान शर्मा ने मानव के व्यवहार को उसके व्यक्तित्व के माध्यम से उसके एकाकीपन से उसकी अन्तर्मुखता से जोड़ा है क्योंकि इन्टेशवर्ट किस्म के व्यक्ति का व्यवहार कुछ अजनबी–सा होता है। उसे अपने चारों ओर का परिवेश नवरात्मक लगता है जिसमें उसे स्वार्थ रूपी अंधकार ही घेरे रहता है। फिर कभी–कभी पल–पल बदलता उल्का अपना अपने ही करवट लेता व्यवहार उसे कभी नास्तिक से आस्तिक बना डालता है तो उस वक्त की उसकी अन्तर्मुखता को साहसिक पलों के फेर के अन्दाज के रूप में संजोया है–

हर निगाह तो अजनबी सी है
चारों ओर परिवेश में
स्वार्थ का अन्धकार पसरा पड़ा है।
फिर भी
दुओं का असर
सम्बल देता है मुझे,
और
मैं बटोर लेता हूँ
साहस
उठ खड़े होने का
जुट जाता है जग में
न हारने के लिए।[11]

जब अन्तर्मुखी आदमी खंड खंड होते हुए अपने भीतर के आदमी से लड़ने लग जाता है तो अपनी जुबां से ही अपनी समाप्त परेशानियों को अपनी दुर्बलताओं को अपने अन्तर्द्वन्द की पीड़ा के द्वारा व्यक्त कर देता है। कवि ने उसकी मानसिकता को हर वक्त भ्रमित होता ही प्रस्तुत किया है–

और में
न तो कमा सकता हूँ
न प्यार कर सकता हूँ
और न ही इसकी
सुरक्षा कर सकता हूँ
ये सब तो
एक दस्तूर निभा रहे हैं
और नन ही मम्
अन्तर्द्वन्द का भेद कर रहे हैं।[12]

एक अन्तर्मुखी भावों से ग्रस्त इन्सान अपने से ही सवाल करता है और स्वयं ही उन सवालों का जवाब देकर मगर वह कभी भी अपने प्रत्युतरों से सन्तुष्ट नहीं हो पाता है क्योंकि एक अकेला भी अच्छा नहीं कर सकता बल्कि वह औरों को हानि पहुँचाता हुआ नजर आता है जिसके परिणामस्वरूप भटकना ही होता है–

मैं स्वयं से पूछता हूँ
क्या अकेला चना भाड़
फोड़ सकता है
तदनन्तर
सद्यः प्रत्युत्तर उभरता है
मेरे अन्तर्मन से कदाचित नहीं
पर एक बात अवश्य है
याद अकेला चना
छिटक जाए तो भाड़ वाले की
आँख अवश्य फोड़ सकता है।

डॉ० जगभनवान शर्मा ने अंतर्मुखी लोगों की इस खाशियत को चित्रांकित किया है कि उनके कहने से पहले सोचना की फला की उपस्थिति मौजूद रहती है। वह वर्णित करता है कि मुझमें और मेरी तस्वीर में काफी अन्तर होता है। एक हकीकत को बयां करती है तो दूसरी मेरे अहंकार को। मैं अनुमित बुराइयों का शिकार हो सकता हूँ क्योंकि मैं इन्सान हूँ मानव या देवता नहीं। मगर मेरी तस्वीर मेरा प्रतिबिम्ब शान्द्रेवादि वृतियों से युक्त होता है–

मैं और मेरा प्रतिविम्ब
मुझमें अहंकार हो सकता है,
पर मेरे
प्रतिबिम्ब में नहीं।
मुझमें
राग–द्वेषादि वृतियाँ
हो सकती हैं
पर मेरे प्रतिबिम्ब में नहीं।

निःसन्देह रूप में कहा जा सकता है अन्तर्मुखता से प्रभावित लोगों को अन्तर्मुखी कहा गया है। कवि डॉ० जयभगवान शर्मा ने ऐसे लोगों को स्वयं पर विश्वास रखने वाले के रूप में पेश करके यह बताने का प्रयास किया

है कि अन्तर्मुखता को दोनों ही स्वरूपों में स्वीकार किया जाना चाहिए। उनमें अच्छाई है तो वहीं बुराई का भी समावेष पाया जाता है क्योंकि जहाँ वे तुन कमिजाजी होते हैं वहीं वे कभी शर्मीले और कभी असामाजिक भी होते हैं। अन्तर्मुखता से प्रभावित लोगों को अपनी मन की बातों को दूसरों के समक्ष आसानी से रखते हैं लेकिन वो दूसरों के साथ आसानी से सहमत नहीं हो पाते।

अंतर्मुखता के अन्तर्गत उनकी स्वयं के साथ वक्त गुजारने औरों की बातों को ध्यान से सुनने कहने से पूर्व सोचने की क्षमता आदि खाशियतों का वर्णन करके अंतर्मुखी लोगों को बहिर्मुखी लोगों की अपेक्षा अधिक संवेदनशील के रूप से उजागर किया है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि डॉ० जयभगवान शर्मा ने अपनी सभी प्रकार की संवेदनाओं को विशेषकर समाज, परिवार और प्रकृति विषयक चित्तवृत्तियों एवं साहित्यिक रूपों को साकार रूप में प्रतिबिम्बित किया है। वैयक्तिक संवेदनाओं व्यक्ति विषय– व्यक्ति के भाव, व्यक्ति अंतर्मुखता, समाज और परिवार, व्यक्ति की बेचैनी, एकान्तता, एकाकीपन, उसकी व्याकुलता के मध्यनजर उसमें आत्मविश्वास भरने की संवेदनाओं का शानदार ढंग से निरूपण किया है। व्यक्ति की संवेदनाओं को संचित करके अपने काव्य या साहित्य सृजन करके व्यक्ति के अनुभवों, सुख–दुःख, तनाव–दबाव, आशा–निराशा, आकांक्षा–अनिच्छा, प्रेम–विरह, विश्वास– विश्वासघात, संघर्ष पलायन आदि का वैयक्तिक मन की भावनाओं को उद्धेलित उसकी अनुभूतियों और विचारों के झरने के द्वारा उसको कहीं नितांत अकेला, कुण्ठित, स्वार्थी, हताश–निराश तो कहीं प्रेम में मग्न और मस्त, उसकी दिवानगी, परवानगी, आशावादिता और आनन्द में डूबे हुए को प्रेरणापुंज में परमार्थरत दृष्टिगोचर और चेतनशील व्यक्ति की मुद्राओं में उसका चित्रांकन सन्दर्भों के मुताबिक कर विश्लेषित किया है।

सन्दर्भ सूची

1. डॉ० मदन बाल वर्मा, प्रकृति और हम, पृ० 37
2. वही
3. तपेश चतुर्वेदी, कविता में संवेदना का स्वरूप, पृ० 112
4. कमल कृष्ण, संवेदनाः एक गवेषणात्मक अध्ययन (श०स० अंक 39) पृ० 13–14
5. डॉ० अनिता कुमारी, सांस्कृतिक दर्शन, पृ० 81
6. डॉ० जयभगवान शर्मा, पथ के राही, पृ० 76
7. डॉ० जयभगवान शर्मा, स्पन्दन–सिहरण, पृ० 21–22
8. डॉ० जयभगवान शर्मा, गवाक्ष– तन्हाई, पृ० 15
9. डॉ० जयभगवान शर्मा, पथ के राही, पृ० 51
10. कार्ल जंग, बहिर्मुखता और अंतर्मुखता, hi.m.Wikipedia.org.
11. डॉ० जयभगवान शर्मा, अतीत की यादें, पृ० 44
12. डॉ० जयभगवान शर्मा, स्पन्दन, पृ० 37
13. जोगेन्द्र सिंह वर्मा, फणीश्वरनाथ रेणु का कथा–साहित्य समाजशास्त्रीय विश्लेषण, पृ० 17–18